IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.21898373

ISSN : 3048-6971

केदारनाथ सिंह की कविताओं में 'चकिया': स्मृति, संवेदना और आत्मीयता

कु० आरती पाण्डेय
शोधार्थी – हिन्दी विभाग
गुलाब देवी महिला पी० जी० कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश
(सम्बद्ध – जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उत्तर प्रदेश, 277001)

शोध सारांश -

केदारनाथ सिंह समकालीन हिंदी कविता के एक प्रमुख कवि हैं। हिंदी साहित्य में उनका पदार्पण अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के प्रकाशन के साथ ही नई कविता के कवि के रूप में हुआ। वर्ष 1960 में अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' के प्रकाशन के साथ ही उन्होंने काव्य-जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और आगे चलकर समकालीन कविता के सर्वश्रेष्ठ तथा सम्मानित कवियों में शामिल हुए। उनकी कविताओं में ग्रामीण संवेदना का सशक्त और व्यापक स्वर उपस्थित है। गाँव उनकी काव्य-रचना का एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। केदारनाथ सिंह मूलतः पूर्वी उत्तर प्रदेश के अंतिम छोर पर स्थित बलिया जिले के एक छोटे-से गाँव चकिया के निवासी थे। यद्यपि उनका अधिकांश जीवन दिल्ली जैसे महानगर में व्यतीत हुआ, तथापि उन्होंने अपनी जन्मभूमि, अपनी मिट्टी, अपने गाँव और अपने लोगों को कभी विस्मृत नहीं किया। चकिया उनकी काव्य-सर्जना का मूल प्रेरणा-स्रोत रहा है। वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनका गाँव और गाँव के लोग ही उनकी कविता के मूल आधार हैं। चकिया के बिना वे कविता क्या, एक पंक्ति भी नहीं लिख सकते।

'चकिया' से जुड़ी स्मृतियों और अनुभवों को आधार बनाकर उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं में अपने गाँव और वहाँ के लोगों के प्रति उनका प्रेम, लगाव तथा उनसे जुड़ी स्मृतियाँ पूरी सच्चाई और संवेदना के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। इतना ही नहीं, ये कविताएँ आधुनिक जीवन में बदलते ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण जीवन के यथार्थ, अभाव, कष्ट, परेशानियों, नगरों की ओर पलायन की मजबूरियों तथा विस्थापन के दंश जैसे अनुभवों को भी पूरी मार्मिकता और प्रामाणिकता के साथ व्यक्त करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में केदारनाथ सिंह की कविताओं में अभिव्यक्त उनकी जन्मभूमि चकिया और उससे जुड़ी स्मृतियों, आत्मीय ग्रामवासियों तथा चकिया के प्रति उनके गहरे प्रेम और लगाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही, चकिया के माध्यम से अभिव्यक्त उनकी व्यापक मानवीय संवेदनाओं और जीवनानुभवों को भी रेखांकित किया गया है।

बीज शब्द - केदारनाथ सिंह, चकिया, ग्राम्य जीवन, संवेदना, स्मृतियां, विस्थापन का दंश।

प्रस्तावना -

केदारनाथ सिंह समकालीन हिंदी कविता के अत्यंत सम्मानित एवं विशिष्ट कवि हैं। हिंदी कविता में उनका पदार्पण अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' (1959) के माध्यम से हुआ। उनका प्रथम काव्य-संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' वर्ष 1960 में प्रकाशित हुआ। बिंब-विधान और शिल्प-विधान की नवीनता, सरल, सरस, संप्रेषणीय तथा लयात्मक भाषा, लोकजीवन से ग्रहण किए गए ठेठ देसी प्रतीकों, मुहावरों और कहावतों का सृजनात्मक प्रयोग उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्होंने समकालीन हिंदी कविता में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की। 'अभी बिल्कुल अभी' (1960), 'ज़मीन पक रही है' (1980), 'यहाँ से देखो' (1983), 'अकाल में सारस' (1988), 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' (1995), 'बाघ' (1996), 'टॉलस्टॉय और साइकिल' (2005), 'सृष्टि पर पहरा' (2014) तथा 'मतदान केंद्र पर झपकी' (2018) उनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं।

"केदारनाथ सिंह शायद हिंदी के समकालीन काव्य परिदृश्य में अकेले ऐसे कवि हैं, जो एक ही साथ गाँव के भी कवि हैं और शहर के भी। अनुभव के ये दोनों छोर कई बार उनकी कविता में एक साथ और एक ही समय दिखाई पड़ते

हैं।"(श्रीवास्तव, 2024,पृ. 5) वस्तुतः उनकी कविताओं में लोकजीवन की सहजता, ग्राम्य संवेदना और नगरीय जीवनानुभव समान रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। उनका काव्य ग्रामीण चेतना और नगरीय बोध का सशक्त एवं संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है।

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर पर स्थित बलिया जनपद के एक छोटे-से गाँव चकिया में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। इसके पश्चात उच्च शिक्षा के लिए वे वाराणसी आए। आजीविका के क्रम में उन्हें वाराणसी, गोरखपुर और पडरौना (कुशीनगर) जैसे नगरों में रहना पड़ा और अंततः वे देश की राजधानी दिल्ली पहुँचे। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) में लगभग तेईस वर्षों तक अध्यापन किया और वर्ष 1999 में सेवानिवृत्त हुए। 19 मार्च 2018 को दिल्ली में ही उनका निधन हुआ।

यद्यपि अपने जीवन का बहुत कम समय ही वे नियमित रूप से अपने गाँव चकिया में व्यतीत कर सके, तथापि गाँव से उनका भावनात्मक संबंध जीवनपर्यंत बना रहा। अध्यापन और लेखन की व्यस्तताओं के बीच जब भी अवसर मिलता, वे अपने गाँव अवश्य जाते थे। वहाँ पहुँचकर वे अपनी मिट्टी, अपने लोगों तथा खेत-खलिहानों के बीच स्वयं को पुनः ऊर्जावान अनुभव करते थे। यही ग्राम्य परिवेश उन्हें सृजन के लिए निरंतर प्रेरणा, आत्मीयता और जीवन-दृष्टि प्रदान करता रहा है।

केदारनाथ सिंह को अपनी जन्मभूमि से गहरा लगाव था। अपने गाँव चकिया, वहाँ के जनजीवन तथा उससे जुड़ी स्मृतियों को उन्होंने अपनी कविताओं में अत्यंत आत्मीयता और गहन संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके लिए चकिया मात्र एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक चेतना, जीवनानुभव, स्मृतियों और ग्राम्य संवेदना का मूल स्रोत है। यही कारण है कि उनकी अनेक कविताओं में चकिया बार-बार उपस्थित होकर भारतीय ग्राम्य जीवन की व्यापक अनुभूति का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार उनका छोटा-सा गाँव और वहाँ का जनजीवन कवि के लिए समूचे देश और विश्व के विविध अनुभवों को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन जाता है। उनकी संवेदना का केंद्र उनका गाँव है, जिसके स्पंदन में समूचे देश और विश्व की धड़कनें भी प्रतिध्वनित होती हैं।

केदार जी की कविताओं में 'चकिया' -

दिल्ली जैसे महानगर में दीर्घकाल तक निवास करने के बावजूद केदारनाथ सिंह का अपनी जन्मभूमि चकिया से संबंध कभी विच्छिन्न नहीं हुआ। उनकी समग्र रचनात्मक चेतना की जड़ें अपने गाँव, उसकी मिट्टी, लोक-संस्कृति तथा वहाँ के जीवनानुभवों में गहराई तक धँसी हुई हैं। उनके लिए चकिया केवल उनका जन्मस्थान नहीं, बल्कि उनकी काव्य-दृष्टि, भाषिक संस्कार और संवेदनात्मक व्यक्तित्व का मूलाधार है। यही कारण है कि उनकी रचनात्मक ऊर्जा और सृजनात्मक प्रेरणा का प्रमुख स्रोत सदैव उनका ग्राम्य परिवेश रहा। वे समय-समय पर चकिया लौटते रहे, क्योंकि उनके लिए यह लौटना मात्र भौगोलिक वापसी नहीं, बल्कि अपनी सर्जनात्मक चेतना का पुनर्संस्कार था। वहाँ जाकर वे अपनी भाषा को पुनः जीवंत बनाते, लोकजीवन की धड़कनों को सुनते और अपनी कविता के लिए नए अनुभव अर्जित करते थे।

केदारनाथ सिंह का मानना है कि उनका गाँव चकिया उनकी रचनात्मक चेतना का मूल स्रोत है। चकिया ने ही उन्हें भाषा की संवेदना, शब्दों के प्रयोग और कविता की रचनात्मक प्रक्रिया का संस्कार प्रदान किया है। चकिया से उनका संबंध इतना गहरा है कि उसके बिना वे कविता क्या कविता की एक पंक्ति भी नहीं लिख सकते। उनके लिए चकिया केवल जन्मभूमि नहीं, बल्कि भाषा, शब्द-संवेदना और काव्य-सृजन का प्रमुख आधार है। (तिवारी, 2016)

केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं के माध्यम से चकिया को केवल स्मृति का विषय नहीं बनाया, बल्कि उसे हिंदी कविता के सांस्कृतिक और संवेदनात्मक मानचित्र पर स्थायी प्रतिष्ठा प्रदान की। उनकी कविताओं में चकिया एक जीवंत सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में उपस्थित होता है, जहाँ से कवि अपनी मानवीय दृष्टि का विस्तार करता है। अपने गाँव, अपनी मिट्टी और अपने लोगों की संवेदनाओं से गहरे जुड़े रहने के कारण ही वे विश्व-मानव की पीड़ा, संघर्ष और जीवनानुभवों से आत्मीय स्तर पर जुड़ पाते हैं। इस प्रकार उनकी ग्राम्य चेतना स्थानीय सीमाओं का अतिक्रमण कर सार्वभौमिक मानवीय संवेदना का रूप ग्रहण कर लेती है। यही उनकी कविता की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है।

गांव और गांव की स्मृतियां उनकी रचनात्मकता के रेशे रेशे में मौजूद रहता है। सही मायने में वे जनपदीय भावनाओं और मानवीय आचरणों के कवि हैं। उनके जनकवि होने की एक जिज्ञासा पर उन्होंने कहा कि, "जनकवि तो बहुत बड़ा शब्द है और जनता तक कितना मैं पहुंच पाया हूं यह नहीं जानता। जनकवि कहलाने लायक हिंदी में कई कवि हो चुके हैं। कई सम्मानित हुए, कई नहीं हुए। लेकिन जो कुछ भी मैं लिखता पढ़ता रहा हूं उनमें गांव की स्मृतियों का ही सहारा लिया है, क्योंकि मैं गांव से आया हूं और ग्रामीण परिवेश की स्मृतियों को संजोए हुए मैं दिल्ली जैसे महानगर में रह रहा हूं। मेरी जड़ें ही मेरी ताकत हैं। मेरी जनता, मेरी भूमि, मेरा परिवेश और उसे संचित स्मृतियां ही मेरी पूंजी है। मैं अपने साहित्य में इन्हीं का प्रयोग करता रहा हूं। और बचे खुचे जीवन में भी जो कुछ कर पाऊंगा उन्हीं के बिना पर कर पाऊंगा।"(नवीन, 2020 पृ.259)

यह कवि के अपने गाँव तथा गाँव के लोगों के प्रति असीम प्रेम और गहरे लगाव का ही प्रतिफल है कि उन्होंने अपने जीवन के ढलान के वर्षों में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'सृष्टि पर पहरा' (2014) को अपने गाँव के लोगों को समर्पित करते हुए लिखा– "अपने गाँव के लोगों को, जिन तक यह किताब कभी नहीं पहुँचेगी"। कवि का यह समर्पण-वक्तव्य उनके ग्रामवासियों के प्रति गहन आत्मीयता और संवेदना का परिचायक है। वे चाहते हैं कि उनकी कविता में निहित प्रेम, आत्मीयता और संवेदना उनके गाँव के लोगों तक पहुँचे। साथ ही, वे इस कटु यथार्थ से भी भली-भाँति परिचित हैं कि साहित्य और पुस्तक-संस्कृति आज भी अधिकांश ग्रामीणों की पहुँच से कोसों दूर है। यही विडंबना उनके इस समर्पण को और अधिक मार्मिक तथा अर्थगर्भित बना देती है।

कवि भले ही अपने गाँव से हजारों किलोमीटर दूर दिल्ली जैसे महानगर में जाकर बस गया हो, पर उसका हृदय सदा के लिए अपने गाँव से जुड़ा हुआ है। गाँव के लोग, उनकी सादगी और आत्मीयता उसे बार-बार अपनी ओर खींच लाते हैं। वह बार-बार अपने गाँव लौटता है और स्वयं से प्रश्न करता है कि आखिर वह यहाँ बार-बार क्यों लौट आता है। वस्तुतः गाँव की हवा, वहाँ के लोग और परिवेश उसे गहरे अपनत्व का अनुभव कराते हैं। केदार जी के लिए उनका गांव 'चकिया' साँस की तरह है, जिसकी जीवनदायिनी ऊर्जा उसकी कविताओं में प्रवाहित होती है।कवि का मानना है कि उसका गाँव और वहाँ के लोग ही उसकी कविता का वास्तविक आधार हैं। किंतु विडंबना यह है कि वही लोग उसकी कविताएँ कभी पढ़ नहीं पाएँगे। दूसरे शब्दों में, शिक्षा और साहित्य आज भी गाँव के अधिकांश लोगों की पहुँच से कोसों दूर हैं। यह स्थिति अत्यंत दुखद है।

"क्या करूँ मैं?
क्या करूँ, क्या करूँ कि लगे
कि मैं इन्हीं में से हूँ,
इन्हीं का हूँ
कि यही हैं मेरे लोग
जिनका मैं दम भरता हूँ कविता में
और यही, यही जो मुझे कभी नहीं पढ़ेंगे।" (सिंह, 2024, पृ. 42)

कवि को सदैव यह आशंका बनी रहती है कि उसके और गाँव के लोगों के बीच कहीं दिल्ली का प्रभाव–अर्थात् महानगरीय जीवन-शैली, आधुनिकता तथा गाँव और शहर के बीच की मानसिक दूरी–बाधा न बन जाए। वह अपने ग्रामीण बंधुओं से मिलते समय बार-बार अपनी घड़ी ठीक करता है। उनका घड़ी ठीक करना प्रतीकात्मक रूप से अपने ग्रामवासियों के साथ स्वयं को सामंजस्यपूर्ण बनाने और उनके जीवन-लय के अनुरूप स्वयं को ढालने का संकेत है। कवि की इच्छा है कि जब भी वह अपने लोगों से मिले, तो उसका शहरीपन उनके बीच न आए। वह चाहता है कि उसके और उसके गाँव के लोगों के बीच कोई कृत्रिम दूरी या अजनबीपन न रह जाए।

"छू लूँ किसी को?
लिपट जाऊँ किसी से?
मिलूँ
पर किस तरह मिलूँ
कि बस मैं ही मिलूँ

और दिल्ली न आए बीच में।"(सिंह, 2024, पृ. 42)

अपने गाँव चकिया की स्मृतियों तथा वहाँ के आत्मीय जनों को याद करने और उनका हाल-चाल पूछने के बहाने केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं में समकालीन समाज की ज्वलंत समस्याओं–जैसे सांप्रदायिकता, धार्मिक उन्माद, विघटनकारी प्रवृत्तियाँ तथा उनके दुष्परिणामों–के प्रति अपनी गहरी चिंता, दुःख और विक्षोभ को अत्यंत सलीके से, किंतु तीखे व्यंग्य के साथ अभिव्यक्त करते हैं। साथ ही वे संवेदनशील पाठकों के समक्ष ऐसे अनेक प्रश्न भी छोड़ जाते हैं, जो उन्हें गंभीर चिंतन और मनन के लिए प्रेरित करते हैं। इस संदर्भ में उनकी दो महत्त्वपूर्ण कविताएँ–'सन् 47 को याद करते हुए' तथा 'इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल'–विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं।

सन् 1947 में भारत के विभाजन के परिणामस्वरूप पूरे देश को सांप्रदायिक दंगों, व्यापक विस्थापन तथा मानवीय त्रासदी का सामना करना पड़ा। अमानवीय हिंसा और आपसी वैमनस्य इस सीमा तक बढ़ गया कि समूची मानवता शर्मसार हो उठी। विभाजन की इसी विभीषिका को अत्यंत मार्मिकता के साथ चित्रित करने वाली कविता है–'सन् 47 को याद करते हुए'। इस कविता में कवि जब सन् 1947 के विभाजन की स्मृतियों को टटोलते हैं, तो उन्हें अपने गाँव चकिया के निवासी नूर मियाँ सहसा याद आ जाते हैं, जो एक दिन अचानक उस बस्ती को छोड़कर चले गए थे। नूर मियाँ की स्मृति के माध्यम से कवि विभाजन की त्रासदी, सांप्रदायिक राजनीति और उससे उत्पन्न मानवीय विघटन पर गंभीर प्रश्न उठाते हैं। इस कविता में कवि आत्मसंवाद की शैली में स्वयं से प्रश्न करता है–

"'तुम्हें नूर मियाँ की याद है केदारनाथ सिंह?
गेहुँए नूर मियाँ
ठिगने नूर मियाँ
रामगढ़ बाजार से सुरमा बेच कर
सबसे आखिर मे लौटने वाले नूर मियाँ
क्या तुम्हें कुछ भी याद है केदारनाथ सिंह?
× × × × × ×
क्या तुम अपनी भूली हुई स्लेट पर
जोड़ घटा कर
यह निकाल सकते हो
कि एक दिन अचानक तुम्हारी बस्ती को छोड़कर
क्यों चले गए थे नूर मियाँ?
क्या तुम्हें पता है
इस समय वे कहाँ हैं
ढाका
या मुल्तान में?" (सिंह, 2024, पृ. 110)

इसी प्रकार सन् 2002 में गुजरात में हुए भीषण सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर रचित कविता 'इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गुजरात में भड़के सांप्रदायिक दंगों की खबरों से व्यथित होकर कवि के दिवंगत पिता को अपने बचपन के मित्र इब्राहिम मियाँ की चिंता सताने लगती है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसे अपने पिता की आत्मीय आवाज़ सुनाई दे रही हो। पिता उससे इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल पूछ आने का आग्रह करते हैं–

"आवाज़ इतनी साफ़ थी
और इतनी आत्मीय
कि वह हो ही नहीं सकती थी
किसी और की आवाज़
मेरे पिता के सिवा।
सो, मुझे लगा वे कह रहे हैं–

रात भर बुरी-बुरी ख़बरें
आती रहीं गुजरात से,
जाओ और पूछ आओ इब्राहिम मियाँ का
हाल- चाल।"(सिंह, 2024, पृ. 111)

पिता की इच्छा का सम्मान करते हुए जब कवि इब्राहिम मियाँ से उनका हाल-चाल पूछता है, तब वे एकटक उसकी ओर देखते हुए अत्यंत मार्मिक स्वर में उत्तर देते हैं–

"कह देना पिता से सब ठीक-ठाक है।
हवा है
पानी है
बस्ती के बाहर एक छोटा-सा क़ब्रिस्तान है।
सब ठीक-ठाक है।" (सिंह, 2024, पृ. 111)

प्रथम दृष्टया इब्राहिम मियाँ का उत्तर सामान्य प्रतीत होता है, किंतु उसके भीतर गहरी विडंबना और पीड़ा निहित है। 'हवा', 'पानी' और 'बस्ती के बाहर एक छोटा-सा क़ब्रिस्तान' का उल्लेख उस भय, असुरक्षा और सांप्रदायिक तनाव की ओर संकेत करता है, जिसे वे प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त नहीं कर पाते। इस प्रकार केदारनाथ सिंह अपने छोटे-से गाँव तथा वहाँ के आत्मीय जनों की स्मृतियों के माध्यम से सांप्रदायिक हिंसा के विरुद्ध मानवीय संवेदना, सह-अस्तित्व और सामाजिक सौहार्द का सशक्त पक्ष प्रस्तुत करते हैं। उनका छोटा-सा गाँव तथा वहाँ के लोग कवि के लिए समूचे देश और विश्व के विविध अनुभवों को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन जाते हैं। उनकी संवेदना का केंद्र उनका गाँव है, जिसके स्पंदन में समूचे देश और विश्व की धड़कनें भी प्रतिध्वनित होती हैं।

"कवि राजनेता की तरह भाषणबाजी नहीं करता है। वह मानवीय संवेदना को काव्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अपने अनुभवों को वह विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करता है। देश को साम्प्रदायिकता के जहर से बचाने के लिए वह प्रेम, विश्वास तथा मैत्री के सूत्र में मनुष्य मात्र को आबद्ध करने का प्रयत्न करता है। इस दृष्टि से केदार जी की कविताओं का महत्व स्वयं सिद्ध है।"(होता, 2016)

कवि को अपने पुरबिहा होने पर गर्व है। वह अपनी स्थानीय पहचान से जुड़े रहकर ही वैश्विक संवेदना से जुड़ पाता है। वह स्वयं को पर्वतों में टीला, पक्षियों में कबूतर, भाषा में पूर्वी तथा नदियों में चंबल बताता है। अर्थात् वह अपनी पुरबिया पहचान से पूर्णतः जुड़ा हुआ है। इसके साथ ही बगदाद में घायल किसी व्यक्ति, युद्ध की विभीषिका में वहाँ बहने वाले रक्त के साथ भी वह अपनी उपस्थिति और संवेदना का अनुभव करता है। इससे स्पष्ट होता है कि कवि की संवेदनाएँ स्थानीय होते हुए भी वैश्विक और सार्वभौमिक हैं। दूसरे शब्दों में, कवि अपने गाँव, अपनी मिट्टी, अपने लोगों तथा अपनी जड़ों से जुड़े रहकर ही विश्व-मानव की पीड़ा और वेदना के साथ तादात्म्य स्थापित कर पाता है।

"इस समय यहाँ हूँ
पर ठीक उसी समय
बगदाद में जिस दिल को
चीर गई गोली
वहाँ भी हूँ।
हर गिरा खून
अपने अंगोछे से पोंछता
मैं वही पुरबिहा हूँ
जहाँ भी हूँ।"(सिंह, 2023, पृ. 26)

'माँझी का पुल' नामक कविता में कवि अपने गाँव चकिया से कुछ दूरी पर घाघरा नदी पर बने पुराने रेलवे पुल 'माँझी का पुल' का स्मरण करते हुए अपने ग्राम्य परिवेश की सामूहिक स्मृतियों का पुनर्सृजन करता है। इस पुल के बहाने वह अपने गाँव के बच्चों, बूढ़ों, अपनी दादी, गाँव के चौकीदार, बंसी मल्लाह, हल चलाते लालमोहर किसान, रतन हज्जाम तथा अन्य ग्रामीण जनों से जुड़ी आत्मीय स्मृतियों में खो जाता है। यह पुल ग्रामीण समुदाय के प्रत्येक

व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इसे लेकर ग्रामीणों की अपनी-अपनी धारणाएँ, लोक-विश्वास और मान्यताएँ हैं। कवि के लिए यही लोक-विश्वास और मान्यताएँ उसके ग्राम्य जीवन की सांस्कृतिक पहचान का आधार हैं। कवि का मानना है कि 'माँझी का पुल' केवल नदी पर निर्मित एक भौतिक संरचना नहीं है, बल्कि वह गाँव के लोगों की चेतना और स्मृतियों में भी समान रूप से विद्यमान है। कवि का विचार है कि पुल न केवल भौतिक दूरियों को कम करता है, बल्कि लोगों के मध्य आत्मीय संबंधों को सुदृढ़ करते हुए उनके मनों के बीच की दूरियों को भी कम करता है।

"मैं जानता हूँ मेरी बस्ती के लोगों के लिए
यह कितना बड़ा आश्वासन है
कि वहाँ पूरब के आसमान में
हर आदमी के बचपन के बहुत पहले से
चुपचाप टँगा है माँझी का पुल।
मैं सोचता हूँ
और सोचकर काँपने लगता हूँ
उन्हें कैसा लगेगा अगर एक दिन अचानक पता चले
वहाँ नहीं है माँझी का पुल!
मैं ख़ुद से पूछता हूँ
कौन बड़ा है–
वह जो नदी पर खड़ा है माँझी का पुल,
या वह जो टँगा है लोगों के अंदर?" (सिंह, 2024, पृ. 33)

इस प्रकार, 'माँझी का पुल' केवल एक भौतिक संरचना नहीं रह जाता, बल्कि वह गाँव की सामूहिक स्मृतियों, लोक-विश्वासों, ग्रामीण संवेदनाओं और आत्मीय जीवन का सशक्त प्रतीक बनकर उभरता है। माँझी के पुल के माध्यम से कवि अपने ग्राम्य जीवन की सांस्कृतिक चेतना, मानवीय संबंधों की ऊष्मा तथा लोक-संवेदना को अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से रूपायित करता है।

केदारनाथ सिंह का अपने गाँव चकिया से इतना गहरा आत्मीय संबंध है कि मात्र उसके नाम का स्मरण ही उनके भीतर गाँव से जुड़ी स्मृतियों, प्रेम और अपनत्व को जागृत कर देता है। उनके लिए गाँव केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक अस्तित्व का आधार है। इसलिए गाँव से संवाद स्थापित करने के लिए उन्हें शब्दों की आवश्यकता नहीं पड़ती। गाँव से आई वह 'चिट्ठी' जिसमें केवल उनके गाँव का नाम भर अंकित है, उनके लिए अनेक अनकहे भावों और स्मृतियों की वाहक बन जाती है। वह मौन रहकर भी सब कुछ कह देती है। वस्तुतः जब भावनाएँ अत्यंत प्रबल होती हैं, तब शब्द गौण हो जाते हैं और मौन ही सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति बन जाता है। महानगरीय जीवन की भाग-दौड़, शोर-शराबे और यांत्रिक व्यस्तताओं के बीच गाँव से प्राप्त यह चिट्ठी कवि को अपनी जड़ों की ओर लौटा देती है। चिट्ठी के कोने में अंकित 'चकिया' नाम उनके अंतर्मन में स्मृतियों का ऐसा संसार खोल देता है, जहाँ गाँव की मिट्टी, प्रकृति, लोग और बचपन के अनुभव एक साथ सजीव हो उठते हैं। इस प्रकार चकिया कवि के लिए केवल एक स्थान का नाम नहीं, बल्कि उनकी स्मृतियों, संवेदनाओं और जीवन-ऊर्जा का मूल स्रोत है।

केदारनाथ सिंह की कविता 'चिट्ठी' गाँव और शहर के मध्य स्थित कवि की गहन संवेदना को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त करती है। यह कविता केवल कवि की निजी स्मृतियों का आख्यान नहीं है, बल्कि रोज़गार और आजीविका की तलाश में गाँव से विस्थापित होकर शहरों में रहने वाले असंख्य ग्रामीणों की सामूहिक मानसिक अवस्था और उनके विस्थापन-बोध का भी सशक्त दस्तावेज़ है। कविता यह संकेत करती है कि भौगोलिक दूरी के बावजूद मनुष्य का अपनी जन्मभूमि से भावनात्मक संबंध कभी समाप्त नहीं होता। यही कारण है कि गाँव का एक छोटा-सा संकेत भी उसकी समस्त स्मृतियों और संवेदनाओं को पुनः जीवित कर देता है।

कल गाँव से

एक चिट्ठी आई
बहुत दिनों बाद
शायद नदी ने भेजी थी।
न दिन, न तारीख, न सिरनामा,
बस ऊपर कोने में
एक बूँद की तरह टँका था
एक छोटा-सा, प्यारा-सा
गाँव का नाम–'चकिया'।"(सिंह, 2024, पृ. 140)

केदार जी की कविताओं का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी लिखते हैं - "केदारनाथ सिंह वर्षों से दक्षिण दिल्ली जैसे मायापुरी में रह रहे हैं पर उनकी कविता का एक अलग 'घर' है या शायद वह घर नहीं है उनके भीतर का उठता 'हाहाकार' है जो उनके चौथे कविता संकलन (अकाल में सारस - 1988 ई०) के शब्दों में लगातार गूंजता,चीखता,रहता है -

शहर के/ उस सबसे व्यस्त चौराहे पर/ सबसे छिपाकर
मैं देर तक पढ़ता रहा/ उस खाली चिट्ठी को/
और सारी चिट्ठी में गूंजता रहा/ चीखता रहा/
बस एक ही शब्द/ चकिया! चकिया!

'चकिया' एक शब्द भी है एक गांव भी और पूरा लोक भी जिससे केदार अपनी कविता को आकार देते हैं, सींचते हैं और ऊर्जा ग्रहण करते हैं। वही उनका बैंक है जिससे वे अपनी छाती में धड़कती हुई छोटी सी पूंजी को बढ़ा सकते हैं -

क्यों न ऐसा हो/ कि एक दिन उठूं/ और वह जो भूरा भूरा सा
एक जनबैंक है/ इस शहर के आखिरी छोर पर/ वहां जमा कर आऊं/सोचता हूं/
वहां से जो मिलेगा ब्याज/ उसी पर जी लूंगा ठाठ से/ कई कई जीवन।"(तिवारी, 2023, पृ. 228)

केदारनाथ सिंह आरंभ से अंत तक अपने गाँव और ग्राम्य जीवन से गहरे जुड़े रहे। उनकी कविताओं में ग्राम्य संवेदना, आत्मीयता और लोकजीवन के प्रति गहरा लगाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कवि अपने गाँव की स्मृतियों और उसके श्रमशील जीवन का स्थायी हिस्सा बने रहना चाहते हैं। पुराने ताखे, संदूक की गंध, स्थायी पते का रजिस्टर, नमक ढोते खच्चरों की घंटी और माँझी के पुल की कील–ये सभी उनके गाँव और जीवन से जुड़ी आत्मीय स्मृतियों के प्रतीक हैं। कवि अपने परिवेश, ग्रामीण जनजीवन तथा उससे जुड़ी छोटी-बड़ी वस्तुओं में किसी न किसी रूप में सदैव उपस्थित रहना चाहते हैं। उनके लिए मृत्यु अथवा अनुपस्थिति का अर्थ पूर्ण विस्मृति नहीं है। उनका विश्वास है कि मनुष्य अपने पीछे अपने अनुभव, स्मृतियाँ, संवेदनाएँ और अपनी पहचान छोड़ जाता है।

"जाऊंगा कहाँ
रहूँगा यहीं
किसी किवाड़ पर
हाथ के निशान की तरह
पड़ा रहूँगा
× × ×   × × ×   × × ×   × × ×
जाऊंगा कहाँ
देखना
रहेगा सब जस का तस
सिर्फ मेरी दिनचर्या बादल जाएगी
साँझ को जब लौटेंगे पक्षी
लौट आऊँगा मैं भी

सुबह जब उड़ेंगे

उड़ जाऊंगा उनके संग..." (सिंह, 2023, पृ. 119)

इस कविता के माध्यम से कवि यह विश्वास व्यक्त करते हैं कि मनुष्य का अस्तित्व केवल उसके शरीर तक सीमित नहीं होता। वह अपनी स्मृतियों, कर्मों, आत्मीय संबंधों और जीवन-मूल्यों के माध्यम से अपने परिवेश में निरंतर बना रहता है। इसलिए कवि अपने ग्राम्य परिवेश से जुड़े इन प्रतीकों के माध्यम से अपनी सतत उपस्थिति तथा अपने गाँव और लोकजीवन के प्रति गहरे आत्मीय लगाव को अभिव्यक्त करते हैं।

"दिल्ली में रहते हुए भी केदारनाथ सिंह को दिल्ली की चमक दमक कभी अपने गिरफ्त में नहीं ले सकी वे अक्सर दिल्ली से बाहर रहकर अपने को सहज महसूस करते थे। बाहर भी अपने किसी सगे संबंधी या आत्मीय मित्र दोस्तों के बीच अधिक से अधिक समय बिताना उन्हें अच्छा लगता था। अपना गांव उन्हें बेहद प्रिय था। वह प्रायः गांव जाते थे। गांव को सिर्फ देखने के लिए नहीं गांव में रहने के लिए और यह देखने समझने के लिए की गांव पहले कैसा था अब कैसा है। वह गांव की हर पुरानी चीज को आँख मूंदकर कर स्वीकारने के पक्ष में नहीं थे लेकिन गांव में रहने वालों के पास अभी भी बहुत कुछ ऐसा सुरक्षित था जो कवि को आत्मीय था और विपरीत से विपरीत परिस्थिति में उसे ऊर्जावान बनाता था।"(पाण्डेय, 2020, पृ. 363)

दिल्ली जैसे महानगर में रहते हुए भी केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं के माध्यम से बार-बार अपने गाँव चकिया लौटते हैं। वे वहाँ के इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल लेते हैं। अपने बचपन के साथी जगरनाथ से उसके जी का हाल पूछते हैं, किंतु उसकी चुप्पी उन्हें भीतर तक साल जाती है। दिल्ली की व्यस्त सड़कों पर चलते हुए उन्हें अपने गाँव के उदास बूढ़े गड़ेरिए का चेहरा याद आता है। अपने गांव के आत्मीय बन्धु कैलाशपति निषाद को वे श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। अपने गाँव के पशु-चिकित्सक हीरा भाई उन्हें मनुष्य और पशु के बीच आत्मीयता के अंतिम सेतु के रूप में प्रतीत हैं।

'माँझी का पुल', 'जगरनाथ', 'कैलाशपति निषाद की स्मृति में', 'इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल', 'हीरा भाई', 'गड़ेरिए का चेहरा', 'गाँव आने पर' तथा 'सन् 47 को याद करते हुए' जैसी कविताओं में कवि ने अपने गाँव चकिया से जुड़े आत्मीय जनों को स्मरण किया है और उनकी स्मृतियों को अत्यंत आत्मीयता के साथ अपनी कविता में संजोया है। इन कविताओं से स्पष्ट होता है कि केदारनाथ सिंह के लिए गाँव केवल एक भौगोलिक स्थान भर ही नहीं है, बल्कि उनकी संवेदना, स्मृति और काव्य-दृष्टि का स्थायी आधार है। यही कारण है कि दिल्ली के महानगरीय जीवन के बीच रहते हुए भी उनकी चेतना बार-बार अपने ग्राम्य परिवेश चकिया की ओर लौटती है और वही उनकी रचनात्मक ऊर्जा का प्रमुख स्रोत बन जाता है।

निष्कर्ष -

केदारनाथ सिंह की कविताओं का अध्ययन और विश्लेषण करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि केदारनाथ सिंह अपने गाँव 'चकिया' से गहरे जुड़े हुए हैं। उन्होंने 'चकिया' को केंद्र में रखकर अनेक कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं के माध्यम से उन्होंने चकिया से जुड़ी अपनी स्मृतियों को स्थायित्व प्रदान किया है। इनमें उन्होंने अपने गाँव, अपनी मिट्टी, अपने लोगों और अपनी जड़ों के प्रति गहरे लगाव, आत्मीयता, प्रेम तथा संवेदना को अभिव्यक्त किया है।

केदारनाथ सिंह के लिए चकिया उनके काव्य-संसार की संवेदना और स्पंदन का प्रमुख स्रोत है। यही उनकी सृजनात्मक चेतना का आधार और रचनात्मक प्रेरणा का केंद्र है। कवि ने अपनी कविताओं में केवल अपने गाँव चकिया के प्राकृतिक सौंदर्य, खेत-खलिहानों और वहाँ के सरल-सहज जीवन का ही चित्रण नहीं किया है, बल्कि आधुनिकीकरण के दौर में गाँवों के प्रति बढ़ती उपेक्षा, पलायन की पीड़ा, ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों, गरीबी, बेरोज़गारी तथा किसान-जीवन की व्यथा को भी मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी मिट्टी और अपने लोगों से दूर रहने की पीड़ा तथा अपने गाँव, समाज और जड़ों से आजीवन जुड़े रहने की आकांक्षा को भी अत्यंत भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है।

केदारनाथ सिंह अपनी ग्राम्य संवेदनाओं और जीवनानुभवों के माध्यम से केवल अपने गाँव की ही नहीं, बल्कि समूचे देश और व्यापक मानवीय संवेदना की भी अभिव्यक्ति करते हैं। यहीकारण है कि उनकी कविताओं में चित्रित चकिया

एक स्थानीय गाँव होकर भी व्यापक मानवीय अनुभवों का प्रतिनिधि बन जाता है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं के माध्यम से चकिया को हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट और स्थायी पहचान प्रदान की है। वस्तुतः चकिया उनकी कविताओं का केवल भौगोलिक केंद्र नहीं, बल्कि उनकी काव्य-दृष्टि, ग्राम्य संवेदना और काव्य-सृजन का मूल स्रोत है।

संदर्भ सूची :-

1. होता, अरुण. (2016). केदारनाथ सिंह की कविताओं से गुजरकर. गद्यकोश. https://gadyakosh.org.
2. नवीन, देवीशंकर. (2020). केदारनाथ सिंह: उनकी कविता का जीवन मूल्य. In कामेश्वर प्रसाद सिंह (सम्पा.), चौपाल: सृष्टि में केदारनाथ सिंह (विशेषांक, अंक 12, पृ. 251-267).
3. पाण्डेय, बलराज. (2020). चुप क्यों हो, जगरनाथ. In कामेश्वर प्रसाद सिंह (सम्पा.), चौपाल: सृष्टि में केदारनाथ सिंह (विशेषांक, अंक 12, पृ. 363-365).
4. तिवारी, रामजी. (2016). चकिया के केदार. In कामेश्वर प्रसाद सिंह (सम्पा.), केदारनाथ सिंह: चकिया से दिल्ली (पृ. 72-77). वाणी प्रकाशन.
5. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद. (2023). आग की ओर इशारा: केदारनाथ सिंह. In समकालीन हिंदी कविता (पांचवां संस्करण, पृ. 210-233). लोकभारती प्रकाशन.
6. श्रीवास्तव, परमानंद. (2024). भूमिका. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण, पृ. 5). राजकमल पेपरबैक्स.
7. सिंह, केदारनाथ. (2023). एक पुरबिया का आत्मकथ्य. In सृष्टि पर पहरा (तीसरी आवृत्ति,पृ. 26). राजकमल प्रकाशन.
8. सिंह, केदारनाथ. (2023). जाऊँगा कहाँ. In सृष्टि पर पहरा (तीसरी आवृत्ति,पृ. 119). राजकमल प्रकाशन.
9. सिंह, केदारनाथ. (2024). गाँव आने पर. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण,पृ. 42). राजकमल पेपरबैक्स.
10. सिंह, केदारनाथ. (2024). चिट्ठी. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण, पृ. 140). राजकमल पेपरबैक्स.
11. सिंह, केदारनाथ. (2024). माँझी का पुल. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण, पृ. 33). राजकमल पेपरबैक्स.
12. सिंह, केदारनाथ. (2024). इब्राहिम मियाँ का हाल-चाल. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण, पृ. 111). राजकमल पेपरबैक्स.
13. सिंह, केदारनाथ. (2024). सन् 47 को याद करते हुए. In परमानंद श्रीवास्तव & अनिल त्रिपाठी (सम्पा.), प्रतिनिधि कविताएँ (पंद्रहवां संस्करण, पृ. 110). राजकमल पेपरबैक्स.